

रॉबर्ट वानॉय, बाइबिल की भविष्यवाणी की नींव, व्याख्यान 12

डैनियल की तारीख, परंपराओं के स्कूल का इतिहास, मौखिक परंपरा और लेखन सी. डैनियल के लिए कथित देर से भाषाई विशेषताएं हैं

1. यूनानी ऋण शब्द

हम डैनियल की देर से डेट के तर्कों पर गौर कर रहे हैं। हमने इस धारणा पर गौर किया है कि पूर्वानुमानित भविष्यवाणी घटित नहीं होती है। हमने ऐतिहासिक त्रुटियों को देखा है और अब सी., "कथित रूप से देर से भाषाई विशेषताएं हैं।" यह तर्क संगीत वाद्ययंत्रों के लिए डैनियल 3:5 में पाए गए कई ग्रीक ऋण शब्दों के उपयोग के साथ-साथ अरामी भाषा के उपयोग पर केंद्रित है, जिसे अरामी के बाद के प्रकार का कहा जाता है। जैसा कि आप जानते हैं, डैनियल 2:4 से अध्याय 7 के अंत तक हिब्रू के बजाय अरामी भाषा में लिखा गया था। उस खंड के अरामाइक को अरामाइक का बाद का रूप कहा जाता है। फिर, मुझे नहीं लगता कि इनमें से कोई भी तर्क ठोस है। सिकंदर महान के समय से बहुत पहले यूनानियों और प्राचीन निकट पूर्व के बीच संपर्क के प्रचुर प्रमाण मौजूद हैं। दूसरे शब्दों में, धारणा यह है कि यदि आपके पास ग्रीक ऋण शब्द हैं तो यह सिकंदर के अधीन ग्रीक साम्राज्य के विकास और उसकी विजय के संबंध में ग्रीक भाषा के प्रसार के समय के बाद का होगा। तर्क वास्तव में पलटा जा सकता है। यह आश्चर्य की बात है कि यदि पुस्तक वास्तव में दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में लिखी गई थी तो इसमें ग्रीक शब्दों की तुलना में अधिक ग्रीक शब्द नहीं हैं, केवल तीन हैं, और ये संगीत वाद्ययंत्रों के लिए तकनीकी प्रकार के शब्द हैं, इसलिए यह कुछ महत्वपूर्ण नहीं लगता है .

2. स्वर्गीय अरामाइक जो लोग अरामाइक प्रश्न का अध्ययन करते हैं, वे पाएंगे कि यह काफी तकनीकी और जटिल हो गया है। एक लेख में कहा गया है कि डैनियल की अरामी शब्दावली में 90 प्रतिशत शब्दावली ईसा पूर्व 5वीं शताब्दी या उससे पहले के दस्तावेजों से प्रमाणित है। यदि आप अपने उद्धरणों के पृष्ठ 16 को देखते हैं, तो पृष्ठ के नीचे और पृष्ठ 17 पर टिंडेल श्रृंखला में जॉयस बाल्डविन, *डैनियल की टिप्पणी से कुछ सामग्री मौजूद है।* आप देखेंगे कि वह अरामी तर्क के बारे में बोल रही है और कहती है, "डैनियल की अरामाइक को शाही अरामाइक दिखाया गया है, या 'अपने

आप में, सी के भीतर किसी भी दृढ़ विश्वास के साथ व्यावहारिक रूप से अप्राप्य है। 600 से 330 ईसा पूर्व इसलिए 'पूर्वी' और 'पश्चिमी' अरामी के बीच अंतर करना अप्रासंगिक है, जो बाद में विकसित हुआ। मूल स्थान का एकमात्र संकेत शब्द क्रम से उत्पन्न होता है, जो अक्कादियन प्रभाव को दर्शाता है, और साबित करता है कि 'डैनियल का अरामी शाही अरामी की प्रारंभिक परंपरा से संबंधित है, जो शाही अरामी के बाद के स्थानीय, फिलिस्तीनी व्युत्पन्न के विपरीत है।" यदि आप पृष्ठ 8 पर अपनी ग्रंथ सूची को देखते हैं, तो आप देखेंगे कि केए किचन का एक निबंध है, "द अरामाइक ऑफ डैनियल," और फिर एडविन यामूची के तीन लेख हैं, "द आर्कियोलॉजिकल बैकग्राउंड ऑफ डैनियल," "डैनियल और अलेक्जेंडर से पहले ईजियन और निकट पूर्व के बीच संपर्क," और "निकट पूर्व में ग्रीक प्रभाव के प्रकाश में डैनियल में ग्रीक शब्द।" वे लेख इस प्रश्न पर विशेष रूप से उपयोगी हैं कि हमारे पास किस प्रकार के अरामाइक हैं, साथ ही ये ग्रीक ऋण शब्द भी हैं। मुझे लगता है कि बाल्डविन और यामूची दोनों के निष्कर्ष कि ये मजबूत तर्क नहीं हैं, बहुत अच्छी तरह से तर्क दिए गए हैं। मैं आपके उद्धरणों में बाल्डविन से आगे पढ़ने के लिए समय नहीं लूंगा।

3. कुमरान (मृत सागर स्क्रॉल) से तर्क, आइए हैंडआउट पर जाएं। हमने वहां पढ़ा कि मृत सागर स्क्रॉल के साक्ष्य 150 से 100 ईसा पूर्व में कुमरान की प्रतियों में डैनियल के अस्तित्व की पुष्टि करते हैं, नवीनतम या शायद उससे भी पहले। इन दोनों का काल 165 ईसा पूर्व से पहले का होने का एक मजबूत तर्क है। रचना की नकल करने के लिए पर्याप्त समय नहीं है और अगर इसकी रचना की देर की तारीख को स्वीकार कर लिया जाए तो इसने कुमरान समुदाय के साथ विहित दर्जा हासिल कर लिया है। दूसरे शब्दों में, अगर हम यह कहें कि यह लगभग 165 में लिखा गया था, नवीनतम 150 तक, तो यह पहले से ही कुमरान समुदाय में पवित्रशास्त्र के एक विहित भाग के रूप में मान्यता प्राप्त है। ऐसा लगता है कि यह बहुत ही असंभव है अगर इसे हाल ही में लिखा गया होता।

4। निष्कर्ष

निष्कर्ष। डैनियल के साथ देर से डेटिंग करने का कोई ठोस कारण नहीं है। देर की तारीख के लिए प्रत्येक ऐतिहासिक और भाषाई तर्क के लिए पर्याप्त उत्तर हैं। अंतर्निहित प्रश्न यह है कि क्या कोई सामान्य भविष्यसूचक भविष्यवाणी की संभावना को स्वीकार करने के लिए तैयार है या नहीं। यदि कोई आश्वस्त है कि डैनियल भविष्य के बारे में इतनी स्पष्टता से बात नहीं कर सकता था, विशेषकर एंटीओकस एपिफेन्स के समय के बारे में, तो उसे इस समय के बाद की तारीख तलाशनी चाहिए। जो लोग वास्तविक भविष्यवाणियों की संभावना को स्वीकार करते हैं, उनके लिए यह सामग्री, पवित्रशास्त्र के कई अन्य पूर्वानुमानित खंडों के साथ, सबूत के रूप में उपयोग की जाती है कि एक ईश्वर है जो पूरे इतिहास को नियंत्रित करता है, जिसने अपने लोगों से अपने सेवकों के माध्यम से भविष्य की घटनाओं के बारे में बात की है। भविष्यवक्ता।

छात्र प्रश्न

विद्यार्थी प्रश्न: डैनियल ने हिब्रू और अरामी दोनों में क्यों लिखा?

मुझे नहीं लगता कि किसी ने कभी भी इसका स्पष्ट उत्तर दिया है। कुछ लोग यह तर्क देने का प्रयास करते हैं कि हिब्रू में भाग यहूदी लोगों के लिए अधिक निर्देशित है, और दूसरा भाग बड़े पैमाने पर दुनिया के लिए है। अरामाइक को अधिक सार्वभौमिक रूप से समझा जाता था। लेकिन मुझे पूरा यकीन नहीं है कि आप इसे समझा सकेंगे। मैं तुम्हें इससे अधिक कुछ नहीं दे सकता। मुझे नहीं लगता कि किसी ने कभी भी इसके लिए कोई अच्छी ठोस व्याख्या दी है।

सी. परंपराओं के स्कूल का इतिहास 1. मौखिक परंपरा - एचएस न्यबर्ग

खंड सी, जहां तक हमारे सामान्य विषय का संबंध है, "भविष्यवक्ताओं के लेखक थे" "परंपरा विद्यालय का इतिहास" है। यह ऐसी चीज़ है जो पिछली आधी सदी में विकसित हुई है। इस दृष्टिकोण के शुरुआती प्रवर्तकों में से एक स्वीडन के उप्साला का एचएस न्यबर्ग नाम का एक व्यक्ति था। उन्होंने *स्टडीज ऑफ होसे नामक* पुस्तक लिखी। न्यबर्ग के अनुसार, प्राचीन निकट पूर्व में विभिन्न प्रकार की सूचनाओं के प्रसारण का सामान्य तरीका लिखित के बजाय मौखिक था। इसलिए परंपराओं के इस इतिहास ने यह तर्क देने का प्रयास किया कि भविष्यवक्ताओं द्वारा दर्ज

किए गए पुराने नियम में सामग्री के इन निकायों के संचरण के साधन और तरीके जो उन्होंने पाए थे, लिखित के बजाय संचरण का मौखिक साधन थे। उन्होंने कहा कि कहानियाँ, गीत, किंवदंतियाँ और मिथक लिखित साहित्य के बजाय मौखिक रूप से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होते रहे। उन्होंने दावा किया कि यह पुराने नियम के बारे में सच है, इसलिए पूर्व-निर्वासन फिलिस्तीन लेखन अनुबंधों, स्मारकों, आधिकारिक सूचियों, पत्रों जैसे व्यावहारिक मामलों तक ही सीमित था - वे चीजें जो अधिक तकनीकी चीजें थीं। परन्तु इतिहास, महाकाव्य कथाएँ, लोक कथाएँ आदि का प्रसारण मौखिक रूप से होता था।

इसके बाद न्यबर्ग का प्रस्ताव है कि यदि ऐसा है, तो निष्कर्ष यह है कि लिखित पुराना नियम बहुत बाद में आता है। यह 587 ईसा पूर्व में यरूशलेम के विनाश और मैकाबीन काल (लगभग 165 ईसा पूर्व) के बीच यहूदी समुदाय का निर्माण था। तो उस काल में जब इजराइल बेबीलोन गया था ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी तक यही वह काल था जब यह सारी मौखिक सामग्री लिखित रूप में दी गई थी। उस समय से पहले जो कुछ लिखित रूप में है उसे बहुत मामूली माना जाना चाहिए। प्रसारण लगभग पूरी तरह से मौखिक था।

तीसरा, भविष्यसूचक उपदेश भी मौखिक रूप से प्रसारित किया गया था और बेबीलोन की कैद के बाद ही लिखा गया था। भविष्यवक्ता लेखक नहीं थे। देखिए, यही वह प्रश्न है जिसके साथ हमने यह चर्चा शुरू की थी: क्या भविष्यवक्ता लेखक थे? उन्होंने कहा, नहीं वे उपदेशक थे। जिन अवधारणाओं की उन्होंने घोषणा की है, वे निर्वासन के बाद तक मौखिक रूप से ही सर्वोत्तम थीं। वहां न्यबर्ग का एक उद्धरण है, जो *द ओल्ड टेस्टामेंट इन मॉडर्न स्टडी में ईसफेल्ट के एक लेख में* पाया गया है, यह आपकी ग्रंथ सूची में है जहां न्यबर्ग कहते हैं, “लिखित पुराना नियम निर्वासन के बाद यहूदी समुदाय की रचना है; इससे पहले जो कुछ हुआ वह निश्चित रूप से निश्चित लिखित रूप में छोटी मात्रा में ही था। केवल सबसे बड़े रिज़र्व के साथ ही हम भविष्यवक्ताओं में लेखकों की गिनती कर सकते हैं। हमें उस परंपरा के मंडलों, कभी-कभी केंद्रों पर विचार करना चाहिए, जिन्होंने सामग्री को संरक्षित और हस्तांतरित किया। यह स्वयं स्पष्ट है कि प्रसारण की ऐसी प्रक्रिया सौंपी गई सामग्री में कुछ बदलाव के बिना जारी नहीं रह सकती है, लेकिन हमारे पास पाठ्य भ्रष्टाचार नहीं है, बल्कि एक सक्रिय परिवर्तन है। बाकी लोगों के लिए, पुराने नियम की छात्रवृत्ति के

लिए ईमानदारी से विचार करना अच्छा होगा कि पुराने नियम के व्यक्तित्वों के शब्दों, *इप्सिमा वर्बा* को पुनः प्राप्त करने की क्या संभावना हो सकती है। हमारे पास उनके कथनों की परंपरा के अलावा कुछ भी नहीं है, और यह अत्यधिक संभावना नहीं है कि उनके लिए प्रसारण का मौखिक रूप कभी भी अस्तित्व में था। यह आपकी सोच को लिखित साहित्य की श्रेणियों से बाहर खींचकर पीढ़ी-दर-पीढ़ी शिष्यों के मंडल के माध्यम से परंपरा के मौखिक हस्तांतरण की श्रेणियों में ले जाता है, जिस प्रक्रिया में सामग्री बदल जाती है। जिस प्रकृति में यह सामग्री सौंपी गई थी, उसके कारण आप वास्तव में भविष्यवक्ताओं के शब्दों तक वापस नहीं पहुंच सकते।

2. हैरिस बिक्लैंड नंबर 2, हैरिस बिक्लैंड न्यबर्ग के छात्र थे और उन्होंने उनके विचार लिए और उन्हें व्यक्तिगत भविष्यवाणी पुस्तकों में लागू किया। उन्होंने कहा कि भविष्यवाणी की किताबें संभवतः पहले से ही डरी हुई मौखिक परंपरा का साहित्यिक प्रतिनिधित्व थीं। पैगंबर एक घेरे से घिरे हुए थे, जो पहले छोटा था, लेकिन फिर बढ़ता गया, जिसने उनकी मृत्यु के बाद भी उनका काम जारी रखा। यह शिष्यों की इन मंडलियों के बीच है कि भविष्यसूचक कथन के जीवित प्रसारण ने अपना घर पाया। बिक्लैंड ने अनुमान लगाया कि भविष्यवक्ताओं को जीवित रखा गया था या उन्हें लगातार बढ़ते बड़े "परंपरा परिसरों", भविष्यवाणी त्यागों और परंपरा परिसरों के संयोजन में जोड़ा गया था। भविष्यवक्ताओं के शब्दों के अलावा उनके बारे में अन्य जानकारी भी एक साथ मिल गई थी। इस प्रकार भविष्यसूचक बातें पीढ़ी-दर-पीढ़ी सौंपी गईं और इस प्रक्रिया में उन्हें लगातार दोहराया गया। अंततः जो बरकरार रखा गया वह इस पर निर्भर था कि लोगों के जीवन में क्या प्रासंगिक और सक्रिय साबित हुआ, ताकि इस प्रक्रिया में एक विकल्प चुना जा सके, जिसकी तुलना बिक्लैंड ने प्राकृतिक जीवन में योग्यतम के अस्तित्व से की। जो महत्वपूर्ण और प्रासंगिक साबित हुआ उसे संरक्षित किया गया। संपूर्ण प्रसारण प्रक्रिया तथाकथित "परंपरा मंडलियों" में हुई। प्रसारण के साधनों के कारण अब कोई यह नहीं कह सकता कि मूल रूप से पैगंबर का क्या था और परंपरा के लिए क्या जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। इसलिए वह कहते हैं कि ज्यादातर मामलों में हमें "भविष्यवक्ताओं और स्वयं महान प्रतिभा के पास वापस जाने" का प्रयास छोड़ देना चाहिए। पैगंबर के शब्द कहाँ हैं? खैर, संचरण की विधि के बारे में यह पूरा विचार हमें बताता है कि

आप वास्तव में ठीक से नहीं जान सकते। परिणामस्वरूप, हमें भविष्यसूचक पुस्तकों के अपने अध्ययन से "नोट्स", "बड़े साहित्यिक टुकड़े", अभिव्यक्ति जैसे विचारों को हटा देना चाहिए जिन्हें साहित्यिक पैटर्न के अनुसार आकार दिया गया है। हमें ऐसे भावों को प्रतिस्थापित करना चाहिए जो संचरण की मौखिक प्रक्रिया के लिए उपयुक्त हों, जैसे कि "परंपरा," "जटिल," "मंडलियाँ," आदि। इसके अलावा, हमें इस तथ्य को पूरी तरह से पहचानना चाहिए कि "इप्सिमा वर्बा के बारे में प्रश्न भविष्यवक्ताओं का समाधान केवल साहित्यिक-आलोचनात्मक आधार पर नहीं, बल्कि पारंपरिक-ऐतिहासिक आधार पर ही किया जा सकता है।" दूसरे शब्दों में, आप साहित्यिक प्रकार की चिंताओं से निकलकर मौखिक परंपरा की चिंताओं की ओर बढ़ते हैं।

3. एडुआर्ड नील्सन, मौखिक परंपरा और आधुनिक समस्या पुराने नियम का परिचय

इस दृष्टिकोण में यहां तीसरी महत्वपूर्ण बात है एडुआर्ड नील्सन, उनका वॉल्यूम *ओरल ट्रेडिशन और द मॉडर्न प्रॉब्लम ओल्ड टेस्टामेंट इंटरोडक्शन*, जो अंग्रेजी में प्रकाशित हुआ था और वह न्यबर्ग और बिक्लैंड की ही तर्ज पर चलता है। मैं ए देना चाहता हूं। "इस थीसिस का सारांश।" अपना ध्यान उस सामग्री की ओर आकर्षित करें जो वह अपनी पुस्तक में प्रकाशित करता है, न कि उस तर्क के लिए जो वह कर रहा है, हालाँकि वह निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि केवल उस साक्ष्य के लिए जो वह भारी मात्रा में सामग्री को याद रखने की भूमिका के बारे में देता है। प्राचीन निकट पूर्वी संस्कृति में मौखिक रूप से बजाया जाता था। इसमें से कुछ दिलचस्प है।

1. बेबीलोन में संस्मरण आपके हैंडआउट पर, "इस पुस्तक का पहला अध्याय प्राचीन निकट पूर्व में मौखिक परंपरा के उपयोग से संबंधित है। नील्सन दर्शाते हैं कि दिल से सीखने के प्रति आधुनिक अवमानना प्राचीन सेमाइट्स की विशेषता नहीं है। मुझे लगता है कि 21^{वीं} सदी के अमेरिका के लिए यह अवमानना अभी भी महत्वपूर्ण है। हमें चीजों को याद रखना पसंद नहीं है। वह कुछ बेबीलोनियाई ग्रंथों की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं जो संकेत देते हैं कि मौखिक परंपरा का आधार बनने वाले पुराने ग्रंथों को याद करना बेबीलोन में अजीब नहीं था। पृष्ठ 17, खंड ए पर अपना उद्धरण देखें, "पाठों को कंठस्थ करने की आधुनिक अवमानना मौखिक परंपरा के लिए

आवश्यक आधार है... प्राचीन मेसोपोटामिया संस्कृति लेखन के प्रति उत्साही प्रतीत होती है; लेकिन हमारे पास कुछ ऐसे संदर्भ हैं जो दिल से सीखने से जुड़े महत्व पर जोर देते हैं। उस इरा मिथक के अक्सर उद्धृत निष्कर्ष से हम उद्धृत करते हैं: 'जो मुंशी इस पाठ को दिल से सीखता है वह दुश्मन से बच जाता है, उसे सम्मानित किया जाता है। 'विद्वानों की सभा में, जहाँ मेरा नाम निरंतर बोला जाता हो, मैं उसके कान खोल दूँगा।' शमश के लिए अशर्बनिपाल की प्रार्थना उल्लेखनीय है क्योंकि यह एक अभिशाप और आशीर्वाद के साथ समाप्त होती है, जो कुछ हद तक प्राचीन प्राच्य शाही शिलालेख के समान है, जिसमें हम आशीर्वाद में पढ़ते हैं: 'जो कोई भी इस पाठ को दिल से सीखेगा और देवताओं के न्यायाधीश, शमाश की महिमा करेगा क्या वह अपना बहुमूल्य बना सकता है, क्या उसके मुंह के शब्द लोगों को प्रसन्न कर सकते हैं। " यह इन ग्रंथों को याद करने के लिए सीखने का एक संदर्भ है ।

2. कुरान को याद करना हैंडआउट पर वापस जाएं। अरब में, कुरान विशेष रूप से अस्तित्व के प्रारंभिक समय में मौखिक रूप से प्रसारित किया गया था। जो कोई भी अल अज़हर की मस्जिद में प्रवेश चाहता है काहिरा में बिना किसी हिचकिचाहट के पूरे कुरान को पढ़ने में सक्षम होना चाहिए। वह मस्जिद आज भी काहिरा की एक बहुत महत्वपूर्ण मस्जिद है / अपने उद्धरण के पृष्ठ 18 पर पैराग्राफ बी को देखें, "पश्चिम-सेमेटिक संस्कृति की ओर मुड़ते हुए हम टिप्पणी करेंगे कि यह बिल्कुल स्पष्ट है कि लिखित शब्द को अत्यधिक महत्व नहीं दिया जाता है। इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्र विधा नहीं माना जाता। भले ही कुरान ने 'पवित्रशास्त्र के धर्मशास्त्र' को जन्म दिया है, जिसकी तुलना यहूदी धर्म और प्रोटेस्टेंटवाद से की जा सकती है, कुरान की लिखित प्रतियां इस्लाम में आश्चर्यजनक रूप से विनीत भूमिका निभाती हैं। कुरान लगातार - अपने अस्तित्व के पहले दिनों की तरह - मौखिक रूप से दिया गया है; हर कोई मस्जिद अल अज़हर में भर्ती होना चाहता है (काहिरा में) बिना किसी हिचकिचाहट के पूरे कुरान को पढ़ने में सक्षम होना चाहिए, और उनके पवित्र पाठ को शुरू करने वालों में से एक द्वारा इसे याद किया जाता है और युवा शिष्यों द्वारा इसे दोहराया जाता है, जब तक कि वे इसे दिल से नहीं जानते। अब वह एक अलग दुनिया है, जहां हम रहते हैं। कुरान की पूरी किताब को मौखिक रूप से सुनकर, उसे उद्धृत करके, और फिर उसे अपनी

याददाश्त में रखकर याद करने के लिए ताकि आप मस्जिद में दीक्षार्थियों के एक समूह के रूप में इसे पढ़ सकें।

3. जोहानन बेन ज़क्कई और मिशनाह संस्मरण अपनी रूपरेखा पर वापस जाएँ। यहूदी धर्म में, वेस्पासियन के शिविर में एक कैदी, जोहानन बेन ज़क्कई, स्मृति से पूरे मिशनाह का पाठ कर सकता था और इस तरह जानता था कि दिन का सही समय क्या था, क्योंकि वह जानता था कि मिशनाह के प्रत्येक भाग को पढ़ने में कितना समय लगेगा। . अपने उद्धरणों के पृष्ठ 18 के नीचे पैराग्राफ सी पर जाएँ। कहानी वेस्पासियन के शिविर में जोहानन बेन ज़क्कई के बारे में बताती है। वेस्पासियन द्वारा पहली बार दर्शकों के बीच उनका स्वागत करने के बाद 'उन्होंने उसे पकड़ लिया और उसे सात तालों से बंद कर दिया, और उससे पूछा कि रात का क्या समय हुआ है। और उसने उनसे कहा. और दिन का कौन सा समय था, और उस ने उनको बता दिया, और हमारे स्वामी जोहानन बेन ज़क्कई को कैसे पता चला? मिशनाह के पाठ से. दूसरे शब्दों में, रब्बी जोहानन बेन ज़क्कई न केवल अपने मिश्रा को दिल से जानते थे, बल्कि उन्हें यह भी पता था कि प्रत्येक पैराग्राफ को पढ़ने में कितना समय लगता है, और यह सब पूरा करने के लिए उन्हें कितना समय चाहिए।" तो किसी ने उनसे पूछा कि यह कितना समय है था और वह मिशनाह के पाठ के कारण जानता था। अब शायद यह कुछ ज्यादा ही अतिशयोक्ति है, लेकिन आप देख रहे हैं कि नील्सन यहां क्या स्थापित कर रहा है, वह यह है कि प्राचीन उत्तर पूर्व में, लोगों ने अपनी यादों के लिए भारी मात्रा में सामग्री समर्पित की थी।

4. प्लेटो और मौखिक स्मृति

पृष्ठ 19 के शीर्ष पर पैराग्राफ डी, जो फिर से नील्सन से है, "लेखन की कला के प्रसार के खिलाफ एक स्पष्ट प्रतिक्रिया के रूप में हम प्लेटो के निम्नलिखित शब्दों (फैड्रियस से) का हवाला दे सकते हैं / " वे उस प्रतिक्रिया के रूप में उल्लेखनीय हैं जो आम लोगों, अज्ञानी अपरिष्कृत जनता से उत्पन्न नहीं होती है - क्योंकि एक अनपढ़ लोगों की विशेषता अवमानना नहीं है, बल्कि लिखित शब्द के प्रति सम्मान है। ये शब्द प्लेटो के अपने समय के बौद्धिक अभिजात वर्ग के समान दृष्टिकोण का

प्रतिनिधित्व करते हैं। और यहाँ प्लेटो सुकरात को उद्धृत करता है। प्लेटो सुकरात का शिष्य था। "सुकरात: फिर, मैंने सुना कि मिस्र में नौक्रेटिस देश के प्राचीन देवताओं में से एक था, जिसके पवित्र पक्षी को इबिस कहा जाता है और देवता का नाम स्वयं थ्यूथ था। वह वह व्यक्ति था जिसने संख्याओं और अंकगणित, ज्यामिति और खगोल विज्ञान, और ड्राफ्ट और पासे, और, सबसे महत्वपूर्ण, अक्षरों का आविष्कार किया था। अब उस समय पूरे मिस्र का राजा थामुस था, जो ऊपरी क्षेत्र के महान शहर में रहता था, जिसे यूनानी लोग मिस्र के थेब्स कहते थे, और वे स्वयं देवता को अम्मोन कहते थे। थ्यूथ उसके पास अपने आविष्कार दिखाने के लिए आया और कहा कि उन्हें अन्य मिस्रवासियों को प्रदान किया जाना चाहिए। लेकिन थैमस पूछता है कि प्रत्येक में क्या उपयोग था, और जैसे ही थ्यूथ ने उनके उपयोगों की गणना की, उन्होंने अनुमोदन या अस्वीकृति के अनुसार प्रशंसा या दोष व्यक्त किया। कहानी यह है कि थामस ने विभिन्न कलाओं की प्रशंसा या दोष में थ्यूथ से कई बातें कहीं, जिन्हें दोहराने में बहुत समय लगेगा; लेकिन जब उन्हें पत्र मिले, 'यह आविष्कार, हे राजा,' थ्यूथ ने कहा, 'मिस्रवासियों को समझदार बना देगा और उनकी याददाश्त में सुधार करेगा; क्योंकि यह स्मृति और ज्ञान के अमृत में है जिसे मैंने खोजा है।' लेकिन थामस ने उत्तर दिया, 'सबसे सरल थ्यूथ, किसी के पास कला उत्पन्न करने की क्षमता होती है, लेकिन अपने उपयोगकर्ताओं के लिए उनकी उपयोगिता या हानिकारकता का न्याय करने की क्षमता दूसरे की होती है; और अब, आप, जो अक्षरों के जनक हैं, अपने स्नेह के कारण उन्हें एक ऐसी शक्ति का श्रेय देने के लिए प्रेरित हुए हैं जो वास्तव में उनके पास है। क्योंकि यह आविष्कार उन लोगों के दिमाग में विस्मृति पैदा करेगा जो इसका उपयोग करना सीखते हैं क्योंकि वे अपनी याददाश्त का अभ्यास नहीं करेंगे। लेखन में उनका भरोसा, बाहरी पात्रों द्वारा निर्मित, जो स्वयं का हिस्सा नहीं हैं, उनके भीतर उनकी अपनी स्मृति के उपयोग को हतोत्साहित करेगा। आपने स्मृति का नहीं, याद दिलाने का अमृत आविष्कार किया है ; और आप अपने विद्यार्थियों को ज्ञान का दिखावा तो देते हैं लेकिन सच्चा ज्ञान नहीं," क्यों? "क्योंकि वे बिना निर्देश के बहुत सी चीज़ें पढ़ेंगे और इसलिए ऐसा प्रतीत होगा कि वे बहुत सी चीज़ें जानते हैं, जबकि वे अधिकांशतः अज्ञानी हैं और उनका साथ पाना कठिन है, क्योंकि वे बुद्धिमान नहीं हैं बल्कि केवल बुद्धिमान प्रतीत होते हैं।" 5. आधुनिक

विचार

मुझे यह काफी दिलचस्प लगता है और यदि वह बात सुकरात ने कई सदियों पहले कही थी, और फिर आप हमारे तकनीकी युग में आते हैं जहां हमारे पास न केवल मुद्रित शब्द हैं बल्कि अब यह सारी जानकारी है जिसमें हम डूब गए हैं और हम देखते हैं ये सभी चीजें हर समय होती हैं और इनमें से 90% हम तुरंत भूल जाते हैं क्योंकि हमने इसे आत्मसात नहीं किया है। यह बस वहां से बाहर तैरने जैसा है। हमने चीजों को स्मृति में समर्पित करने से दूर होकर बहुत कुछ खो दिया है - विशेष रूप से पवित्रशास्त्र के दायरे में और पवित्रशास्त्र के शब्दों और उस प्रकार की चीजों में। इसलिए, मुझे यह आकर्षक लगता है, इसलिए नहीं कि यह वास्तव में उस तर्क का समर्थन करता है जिसे नील्सन इसके साथ बनाने की कोशिश कर रहा है, बल्कि सिर्फ इसलिए कि यह उन मुद्दों और सवालों का समर्थन करता है जो यह उठाता है।

हैंडआउट के पृष्ठ 16 पर वापस जाएँ। हजारों ब्राह्मणों ने अभी भी अपनी पुस्तकें कंठस्थ कर ली हैं और यह 153,826 शब्द लंबी हैं। हिंदुओं ने अपने वेदों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से प्रसारित किया। प्राचीन ग्रीस में भी यही सच था।

6. इज़राइल और स्मृति और लेखन उद्धरण के पृष्ठ 19 पर उस पर एक अनुच्छेद है। हम उस पर गौर करने में समय नहीं लगाएंगे। लेकिन नील्सन इन सभी उदाहरणों का हवाला देते हैं और फिर वह कहते हैं कि इज़राइल में, धार्मिक ग्रंथों को उसी तरह प्रसारित किया गया था। और निर्वासन के बाद ही उन्हें महान स्थिरता प्राप्त हुई। और वह न्यबर्ग से सहमत हैं कि लेखन की शुरुआत आत्मविश्वास के संकट के कारण हुई थी, और आत्मविश्वास का संकट निर्वासन में जाने के कारण हुआ था। वे सामान खोने जा रहे थे इसलिए उन्हें इसे लिखने की ज़रूरत थी।

वह इस विवाद को दोतरफा तरीके से स्थापित करने का प्रयास करता है, एक नकारात्मक तरीके से इज़राइल में लेखन की इस अधीनस्थ भूमिका को स्थापित करके और दूसरा सकारात्मक रूप से मौखिक प्रसारण के महत्व को स्थापित करके। मैं उस चर्चा के उनके तर्कों पर गौर करने के लिए समय लेना चाहता था, लेकिन उनके अनुसार, इज़राइल के निर्वासन से पहले लेखन मुख्य रूप से केवल व्यावहारिक उद्देश्यों जैसे अनुबंधों, सरकारों, स्मारकों, आधिकारिक रजिस्टर की

सूचियों, पत्रों के लिए किया जाता था और इसका उपयोग नहीं किया जाता था। विशुद्ध साहित्यिक प्रयोजन। इतिहास की परंपरा, महाकाव्य कथाएँ, लोक किंवदंतियाँ, यहाँ तक कि कानून भी उन्हें मौखिक रूप से सौंपे गए थे। अपने निष्कर्ष में वे कहते हैं, "अत्यधिक सावधानी बरते बिना लेखकों को भविष्यवक्ताओं और कवियों में नहीं गिना जाना चाहिए।" यही परंपरा-इतिहास दृष्टिकोण है।

बी. नीलसन की थीसिस का मूल्यांकन

1. ओटी मौखिक परंपरा उदाहरण: निर्गमन 10 :1-2

बी. "नीलसन की थीसिस का आकलन।" यह निश्चित रूप से सच है कि प्राचीन इज़राइल में मौखिक परंपरा मौजूद थी, लेकिन हमें नहाने के पानी के साथ बच्चे को बाहर नहीं फेंकना चाहिए। एक डच विद्वान डब्ल्यूएच गिस्पेन ने पुराने नियम में मौखिक परंपरा पर एक मोनोग्राफ लिखा था। उस मोनोग्राफ में, वह पुराने नियम के अट्टाईस विभिन्न ग्रंथों पर चर्चा करता है जो मौखिक परंपरा की बात करते हैं। उनमें से निर्गमन 10:1, 2, व्यवस्थाविवरण 6:20-25, न्यायाधीश 6:13, भजन 44:1-3 और भजन 78 उत्कृष्ट हैं। आइए इनमें से कुछ को देखें। निर्गमन 10:1 और 2, यह विपत्तियों के संदर्भ में है और आप वहां पढ़ते हैं, "यहोवा ने मूसा से कहा, 'फिरौन के पास जाओ क्योंकि मैं ने उसके मन और उसके हाकिमों के मन को कठोर कर दिया है, कि मैं ये चमत्कार कर सकूँ 'फिर पद दो में, 'ताकि तुम अपने बच्चों और पोते-पोतियों को बता सको कि मैं ने मिस्रियों के साथ कैसा कठोरता से व्यवहार किया, और उनके बीच कैसे अपने चिन्ह दिखाए, कि तुम जान लो कि मैं यहोवा हूँ।" यहाँ प्रभु के उद्देश्य का एक भाग यह था कि माता-पिता ये बातें अपने बच्चों को मौखिक रूप से बताएँगे और उनके बच्चे इसे अपने बच्चों तक पहुँचाएँगे, और ईश्वर ने जो किया उसकी कहानी पीढ़ियों तक प्रसारित होती रहेगी।

2. व्यवस्थाविवरण 6:20-25

व्यवस्थाविवरण 6:20-25, "भविष्य में जब तेरा पुत्र तुझ से पूछे, 'हमारे परमेश्वर यहोवा ने तुझे जो आज्ञा दी है, उसका क्या अर्थ है?' उसे बताएं:" और यहां यह कहानी है कि भगवान ने अपने लोगों के लिए क्या किया है, "हम मिस्र में फिरौन के गुलाम थे, लेकिन प्रभु ने हमें अपने शक्तिशाली

हाथ से मिस्र से बाहर निकाला। हमारी आंखों के सामने यहोवा ने मिस्र और फिरौन और उसके सारे घराने पर बड़े और भयानक चिन्ह और चमत्कार भेजे। परन्तु वह हमें वहां से निकाल लाया, और हमें वह देश दिया, जिसके देने का वचन उस ने हमारे पुरखाओं से शपथ खाकर कहा था। यहोवा ने हमें इन सब नियमों का पालन करने और अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानने की आज्ञा दी, कि हम सदा उन्नति करते रहें, और जीवित बने रहें, जैसा कि आज होता है। और यदि हम अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने इन सब व्यवस्थाओं का पालन करने में चौकसी करें, जैसे उस ने हमें आज्ञा दी है, तो यही हमारा धर्म ठहरेगा।' इसलिए, जब आपके बच्चे पूछें कि इन बातों का क्या मतलब है, तो उन्हें बताएं।

3. भजन 44 और 78

आइये भजन 44:1-3 की ओर चलें, “हे परमेश्वर, हम ने अपने कानों से सुना है; हमारे बाप-दादों ने हम से कहा है, कि तुम ने उनके दिनों में, अर्थात् बहुत समय पहले क्या किया था। तू ने अपने हाथ से अन्यजातियोंको निकाल दिया, और हमारे पुरखाओंको बसाया; तू ने देश देश के लोगों को कुचल डाला, और हमारे पुरखाओं को फलने-फूलने दिया। न तो उन्होंने अपनी तलवार के बल पर देश जीता, और न उनकी भुजाओं ने उन्हें विजय दिलाई; वह तेरा दाहिना हाथ, तेरी भुजा, और तेरे चेहरे का नूर था, क्योंकि तू उनसे प्रेम करता था।”

फिर भजन 78, आइए श्लोक 1 से शुरू करें, “हे मेरी प्रजा, मेरी शिक्षा सुनो; मेरे मुख की बातें सुनो। मैं दृष्टान्तों में अपना मुंह खोलूंगा, मैं गुप्त बातें, वरन प्राचीनकाल की बातें कहूंगा। जो कुछ हमने सुना और जाना है, जो हमारे बाप-दादों ने हमें बताया है। हम उन्हें उनके बच्चों से नहीं छिपाएंगे; हम अगली पीढ़ी को प्रभु के प्रशंसनीय कार्यों, उनकी शक्ति और उनके द्वारा किए गए चमत्कारों के बारे में बताएंगे” इत्यादि। श्लोक 6, “ताकि अगली पीढ़ी उन्हें जान सके, यहाँ तक कि उनके बच्चे भी जो अभी पैदा होने वाले हैं, और वे बदले में अपने बच्चों को बताएँगे। तब वे परमेश्वर पर भरोसा रखेंगे, और उसके कामों को न भूलेंगे, वरन उसकी आज्ञाओं को मानेंगे।”

4. सारांश

इसलिए, पुराने नियम के काल में काम करने वाली मौखिक परंपरा के स्पष्ट संदर्भ हैं, लेकिन हमें जो नोटिस करना चाहिए वह यह है कि, यह मौखिक प्रसारण परिवार के दायरे में एक *सिट्ज़ इम लेबेन में पाया जाता है*। जीवन में इसकी स्थिति क्या है? यह पिता बच्चों को बता रहे हैं, बच्चे अपने बच्चों को बता रहे हैं। जो व्यक्ति अपनी परंपरा को आगे बढ़ाते थे वे अपने बच्चों के पिता थे। अन्य क्षेत्रों और स्थानों पर मौजूद पेशेवर चारणों या संकटमोचकों का कोई सबूत नहीं है। दो, भजन 78:6 के शब्दों में इसका उद्देश्य है कि आने वाली पीढ़ी परमेश्वर के कार्यों को जान सके। तीन, चली आ रही परंपरा में कम से कम वह शामिल है जो हम मोक्षदायी इतिहास के बुनियादी तथ्यों के सारांश के संदर्भों से बता सकते हैं। आप शायद कह सकते हैं कि भगवान ने अपने लोगों के लिए क्या किया है, इसका एक संक्षिप्त सारांश। चौथा, जो मुझे काफी महत्वपूर्ण लगता है, वह परंपरा कभी भी लिखित निर्धारण से अलग नहीं थी।

उदाहरण के लिए, निर्गमन 17:14 में, हम यहां मोज़ेक पर वापस आते हैं - यह वह जगह है जहां मिस्र से सिनाई के रास्ते में अमालेकियों द्वारा इज़राइल पर हमला किया जाता है। तब यहोवा ने मूसा से कहा, “इसे स्मरण रखने योग्य पुस्तक में लिख ले, और यहोशू भी इसे सुने, क्योंकि मैं स्वर्ग के नीचे से अमालेक का स्मरण पूरी रीति से मिटा डालूंगा।” निश्चित रूप से, इसे बच्चों के साथ बताया जा सकता है लेकिन इसे लिखा भी गया ताकि परंपरा लिखित निर्धारण से अलग न हो। अधिकांशतः इज़राइल के बाहर भी यही स्थिति थी, यहाँ तक कि उन देशों में भी जिनका उल्लेख नीलसन ने किया था, मिस्र और बेबीलोन में, और कुरान में भी। आप देख सकते हैं कि नीलसन जिन उदाहरणों का उपयोग करता है, वे वास्तव में उसकी बात को स्थापित नहीं करते हैं। क्योंकि प्राचीन मेसोपोटामिया में सीखी गई वे किंवदंतियाँ कंठस्थ पाठ थे; कुरान एक पाठ था जिसे याद किया गया और आगे बढ़ाया गया। तो, हाँ, एक मौखिक परंपरा थी लेकिन मौखिक परंपरा पाठ के लिखित निर्धारण के अलावा या उसके उदाहरणों में भी संचालित नहीं होती है। मौखिक पाठ लिखित मूल का अनुसरण करता है।

5. लिखित या मौखिक कानून संहिता पाँच, मुझे नहीं लगता कि इस बात से इनकार किया जा सकता है कि इज़राइल के पास शुरुआती समय में लिखित कानून थे। वह यह तर्क देने की कोशिश

करता है कि कानून भी मौखिक रूप से पारित किए गए थे। लिखित रूप में ऐसे कई कानून कोड हैं जो मध्य पूर्व में पाए गए हैं जो मूसा के समय से बहुत पहले के हैं। उदाहरण के लिए, हम्मुराबी कोड और लिपित-ईशतर कोड। वे सभी मूसा से भी पहले के समय के हैं और सभी मिट्टी की पट्टियों पर लिखित रूप में हैं।

6. लिखित इतिहास -- संख्या 33:2 और अंत में, इसमें लिखित इतिहास का भी स्पष्ट उल्लेख है। संख्या 33:2 मूसा द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा के रिकॉर्ड के बारे में बताती है। संख्या 21:14 प्रभु के युद्धों की पुस्तक की बात करता है, जिसे पुस्तक या पुस्तक कहा जाता है। यह एक लिखित स्रोत रहा होगा। फिर भी नीलसन का कहना है कि सामरिया के पतन के समय तक यह एक काव्य रचना के रूप में केवल मौखिक रूप में मौजूद था। 1 राजा 11:41 में वह पुस्तक जिसमें सुलैमान के इतिहास का उल्लेख है। प्रथम राजा 14:19 और 29 में उस पुस्तक का उल्लेख है जो यहूदा के राजाओं का विवरण देती है।

7. भविष्यवक्ताओं के ग्रंथ लिखना: 1 और 2 इतिहास इसके अलावा, भविष्यवक्ताओं के लेखों का उल्लेख है। यहां हमारी चिंता मुख्य रूप से यह है कि भविष्यवक्ता कौन थे। क्या भविष्यवक्ता लेखक थे? 1 इतिहास 29:29 को देखें, "जहां तक राजा दाऊद के शासनकाल की घटनाओं की बात है, आरंभ से अंत तक, वे शमूएल द्रष्टा के अभिलेखों, नातान भविष्यवक्ता के अभिलेखों और गाद द्रष्टा के अभिलेखों सहित, में लिखी गई हैं।" उसके शासनकाल और शक्ति का विवरण, और उन परिस्थितियों का विवरण जिन्होंने उसे और इस्राएल और अन्य सभी देशों के राज्यों को घेर लिया।" यह काफी व्यापक लगता है। यह कहता है कि ये इन भविष्यवक्ताओं शमूएल, नाथन और गाद द्वारा लिखे गए थे। फिर 2 इतिहास 12:15 में, "रहूबियाम के शासनकाल की शुरुआत से अंत तक की घटनाएँ क्या शेमिया भविष्यवक्ता और इद्दो ददर्शी के अभिलेखों में नहीं लिखी गई हैं जो वंशावली से संबंधित हैं?" और फिर इद्दो द्रष्टा के तीन और संदर्भ हैं। दिलचस्प बात यह है कि 2 इतिहास 32:32 यशायाह को संदर्भित करता है। आइए उस पर नज़र डालें, "हिजकिय्याह के शासन की अन्य घटनाएँ और उसकी भक्ति के कार्य यहूदा और इस्राएल के

राजाओं की पुस्तकों में आमोज़ के पुत्र भविष्यवक्ता यशायाह के दर्शन में लिखे गए हैं।"

तो मुझे ऐसा लगता है कि भले ही यह एक दिलचस्प विचार है और भले ही नीलसन ने स्मृति के लिए प्रतिबद्ध भारी मात्रा में सामग्री के ऐसे कई उदाहरणों की अपील की है जो मौखिक रूप में प्रसारित किए गए थे, इससे यह मामला नहीं बनता है कि मौखिक परंपरा अस्तित्व में थी एक लिखित निर्धारण के अलावा. इसलिए मुझे नहीं लगता कि उन्होंने अपनी बात स्थापित की है।

8. पुनश्च. 77 - मौखिक परंपरा का उदाहरण मैं यहां यह सम्मिलित कर सकता हूं कि कुछ स्थानों पर प्राचीन इज़राइल में मौखिक परंपरा के प्रमाण पुराने नियम की लिखित सामग्री के पूरक हैं। और इससे मेरा तात्पर्य यह है कि यदि आप भजन 77 को देखें, तो यह मिस्र से इस्राएल की मुक्ति के बारे में बात करता है। श्लोक 15 पर जाएँ, "तू ने अपने पराक्रमी हाथ से अपने लोगों, याकूब और यूसुफ के वंशजों को छुड़ाया। हे परमेश्वर, जल ने तुझे देखा, और जल ने तुझे देखा, और क्रोधित हुआ; बहुत गहराइयाँ हिल गईं। बादलों ने जल बरसाया, आकाश गड़गड़ाहट से गूँज उठा; तुम्हारे तीर आगे-पीछे चमकते रहे। बवंडर में तेरी गड़गड़ाहट सुनाई दी, तेरी बिजली ने जगत को प्रकाशित कर दिया; पृथ्वी कांप उठी और कांप उठी। तुम्हारा मार्ग समुद्र से होकर जाता था, तुम्हारा मार्ग विशाल जल से होकर जाता था, यद्यपि तुम्हारे पदचिन्ह दिखाई नहीं देते थे। तू ने मूसा और हारून के द्वारा अपनी प्रजा की अगुवाई झुण्ड की नाई की। लाल सागर के उस सन्दर्भ में; इसमें यहाँ "गरज और बिजली" का उल्लेख है। यदि आप निर्गमन 14 के पाठ पर पीछे जाएँ, तो वहाँ गड़गड़ाहट और बिजली या तूफ़ान की घटनाओं का कोई संदर्भ नहीं है। वह कहां से आया? यह संभवतः भजनकारों की मौखिक परंपरा से आया है, जो जानते हैं कि उस समय जो कुछ हुआ था उसके विवरण में इसका उपयोग किया जा रहा है।

9. यहोशू 24 मौखिक परंपरा के एक उदाहरण के रूप में यहोशू 24:2 में यहोशू के जीवन के अंत में एक अनुबंध नवीनीकरण समारोह है जो उसने शकेम में आयोजित किया था। और यहोशू 24:2 में कहता है, "यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर, कहता है: 'बहुत समय पहले तुम्हारे पूर्वज, इब्राहीम और नाहोर के पिता तेरह सहित, नदी के पार रहते थे और अन्य देवताओं की पूजा करते थे।'" यहोशू

कहाँ है मिलता है कि? उत्पत्ति में तेरह और नाहोर द्वारा अन्य देवताओं की पूजा करने का कोई संदर्भ नहीं है। संभवतः मौखिक जानकारी रही होगी जो पीढ़ियों से चली आ रही थी।

10. 2 टिम. 3:8 मौखिक परंपरा के उदाहरण के रूप में 2 तीमुथियुस 3:8 में, आपके पास मिस्र में पलायन के समय के जादूगरों, जैनेस और जाम्ब्रेस का संदर्भ है। वे नाम कहाँ से आते हैं? निर्गमन की पुस्तक में जादूगरों के नाम का कोई उल्लेख नहीं है। हो सकता है कि यह मौखिक परंपरा से आया हो। पुराने नियम के बाद के बिंदुओं में इस तरह की जानकारी के बहुत सारे उदाहरण हैं नए नियम में वह शामिल है जो पुराने नियम की विहित पुस्तकों की पूर्व लिखित सामग्री में नहीं है। इसलिए मुझे नहीं लगता कि हमें उस भूमिका के बारे में रक्षात्मक होने की ज़रूरत है जो मौखिक परंपरा ने प्राचीन इज़राइल में निभाई होगी। यह शायद बहुत प्रमुख बात रही होगी। लेकिन मुद्दा यह है कि यह उस तरह से काम नहीं करता जिस तरह से नील्सन यह कहने की कोशिश कर रहा है कि इसने काम किया - कि यह सदियों से भविष्यसूचक सामग्री के इन महान निकायों के प्रसारण का साधन था जब तक कि अंततः यह एक लिखित निर्धारण पर नहीं आया।

11. निष्कर्ष तो, निष्कर्ष में: एक, भले ही मौखिक परंपरा प्राचीन इज़राइल में मौजूद थी, लेकिन इसने वह भूमिका नहीं निभाई जो नील्सन ने बताई है। और दो, मुझे नहीं लगता कि इस बात का कोई ठोस सबूत है कि निर्वासन से पहले लेखन का उपयोग साहित्यिक उद्देश्यों के लिए नहीं किया जाता था। यह दुनिया के प्राचीन क्षेत्रों के साथ-साथ पुराने नियम के बारे में हम जो कुछ भी जानते हैं, उसके विपरीत है। उदाहरण के लिए, एबला में हाल ही में बाइबिल से इतर पुरातात्विक खोजों ने इब्राहीम से पहले के समय में "साहित्यिक उद्देश्यों" के लिए लेखन के उपयोग की स्थापना की। आप एबला में लगभग 2300 ईसा पूर्व में वापस जा रहे हैं, और उन ग्रंथों के बारे में जो कहा गया है, उसके अनुसार, भले ही ग्रंथ स्वयं प्रकाशित नहीं हुए हैं, वहां बहुत सारी महाकाव्य प्रकार की कहानी सामग्री मौजूद है। और तीन, इतिहासकार द्वारा उल्लिखित स्रोतों से संकेत मिलता है कि भविष्यवक्ताओं ने लिखा था। इतिहासकार ने विशेष रूप से कई भविष्यवक्ताओं का नाम लिया है जिन्होंने लिखा था। अब केवल यशायाह का उल्लेख किया गया था जो विहित भविष्यवक्ताओं के

लेखकों में से एक था। दूसरे की सामग्री संरक्षित नहीं थी, लेकिन वे भविष्यवक्ता थे जिन्होंने लिखा था। यह निष्कर्ष निकालने का कोई कारण नहीं है कि भविष्यवक्ता लेखक नहीं थे। किसी को यिर्मयाह अध्याय 36.IX में भविष्यवक्ता यिर्मयाह की लेखन प्रक्रिया के विस्तृत विवरण को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए

। भविष्यवाणी लेखों की व्याख्या के लिए कुछ व्याख्यात्मक सिद्धांत

यह हमें रोमन अंक IX, "भविष्यवाणी लेखन की व्याख्या के लिए कुछ व्याख्यात्मक सिद्धांत," और ए, "भविष्यवाणी भविष्यवाणी की कुछ सामान्य विशेषताएं" तक लाता है। मैं पहले उन सामान्य विशेषताओं को देखना चाहता हूं, और फिर बी के अंतर्गत "व्याख्या के लिए कुछ दिशानिर्देश।"

1. पूर्वानुमानित भविष्यवाणी का उद्देश्य तो पहले पूर्वानुमानित भविष्यवाणी की कुछ सामान्य विशेषताएँ। 1. " भविष्यवाणी भविष्यवाणी का उद्देश्य ।" आप कह सकते हैं कि हमने पहले ही बाइबिल की भविष्यवाणी के दो पहलुओं का उल्लेख किया है, जिन्हें कभी-कभी "आगे बताना" और "भविष्यवाणी" शब्दों के साथ लेबल किया गया है। आगे बताने से मेरा तात्पर्य उपदेश, फटकार, सुधार और निर्देश से है। भविष्यवाणी से मेरा तात्पर्य भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं की भविष्यवाणी से है, कुछ तत्काल भविष्य में और कुछ सुदूर भविष्य में। मुझे लगता है कि आमतौर पर किसी भविष्यवाणी संदेश के भविष्य बताने वाले पहलू को भविष्यवाणी पहलू के पक्ष में इस तरह से उपेक्षित कर दिया जाता है कि अक्सर भविष्यवाणी संदेश का मूल उद्देश्य अस्पष्ट हो जाता है।

हम यहां पूर्वानुमानित भविष्यवाणी के उद्देश्य के बारे में बात करने जा रहे हैं। क्या है वह? मुझे लगता है कि इसका उद्देश्य उन लोगों की भूख को संतुष्ट करना नहीं है जो भविष्य के बारे में उत्सुक हैं और भविष्यसूचक भविष्यवाणी का उपयोग आज उस तरह से नहीं किया जाना चाहिए। भविष्यवाणी में भविष्य कहनेवाला तत्व - जब आप भविष्यवक्ताओं के बारे में बात करते हैं तो ज्यादातर लोग यही सोचते हैं - को कभी भी इसके पारमार्थिक कार्य, यानी इसकी निर्देशात्मक प्रकृति से अलग या पृथक नहीं किया जाना चाहिए। भविष्यवाणी संदेश का उद्देश्य उपदेश देना,

फटकारना, चिंतन करना, प्रोत्साहित करना और पश्चाताप का आह्वान करना है।

अपने उद्धरण पृष्ठ 20 को देखें। मुझे लगता है कि यहां 3 अलग-अलग लेखक हैं। सबसे पहले विलियम डायरनेस का है और ध्यान दें कि उन्होंने क्या कहा, "यह कोई संयोग नहीं है कि भविष्यवाणी पर हैल लिंडसे की पहली किताब [*द लेट ग्रेट प्लैनेट अर्थ, 25 साल पहले एक बेहद लोकप्रिय किताब*] का प्रकाशन तीन वर्षों में ज्योतिष के सबसे बड़े पुनरुद्धार के साथ हुआ था।" सौ साल। (यह देखना दिलचस्प है कि उनकी किताब किताबों की दुकानों में ज्योतिष पुस्तिकाओं के साथ कितनी बार दिखाई देती है।) मनुष्य भविष्यवाणी में उतनी ही आसानी से बच सकता है जितना कि ज्योतिष में। किसी भी स्थिति में वह एक मोहरा है और इस तरह नैतिक जिम्मेदारी से मुक्त हो गया है। यह किताब के अंतिम पन्नों से लिंडसे के उद्देश्यों का कोई हिस्सा नहीं था... लेकिन, हमें सावधान रहना चाहिए कि मसीह की वापसी की हमारी लालसा जिम्मेदारी से बचने की हमारी इच्छा से प्रेरित न हो।"

और फिर रॉस अगले पैराग्राफ में, "यदि भविष्यवाणियां वास्तव में एक बुनियादी नैतिक चिंता से प्रेरित हो रही हैं, जैसा कि मुझे विश्वास है कि एक विस्तृत अध्ययन प्रदर्शित करेगा, तो यह हमारी प्रतिक्रिया है जो सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा है। अगर हमें भविष्यवाणियों की व्याख्या में विशेषज्ञ बनना चाहिए, अगर हमें भविष्य की चीजों का सारा ज्ञान है, हां, भले ही हम यीशु के आने का दिन और समय जानते हों, लेकिन अगर हमारा जीवन इस उम्मीद से नहीं बदलता है कि ईश्वर क्या करेगा, तो हमने भविष्यसूचक अध्ययन को पार्लर के खेल में बदल दिया है और हमारा ज्ञान आशीर्वाद के बजाय अभिशाप बन गया है।

फिर अंत में ड्वाइट विल्सन अब यहां कुछ ऐसा रखते हैं जो अक्सर, मुझे लगता है, पूर्वसहस्राब्दी युगांतशास्त्रीय विचार के बारे में एक कमजोर विशेषता रही है। मैं अपनी पहचान प्रीमिलेनियल के रूप में बताऊंगा, लेकिन प्रीमिलेनियलवादियों के लिए भविष्यवाणियों की व्याख्या का बहुत दुरुपयोग हुआ है। वह कहते हैं, "प्रीमिलेनियल का इतिहास, गलत अटकलों से भरा पड़ा है, जिसने उनकी विश्वसनीयता को कम कर दिया है। कभी-कभी झूठी पहचान हठधर्मिता से की गई है, कभी-कभी केवल संभावनाओं या संभावनाओं के रूप में, लेकिन परिणाम हमेशा एक ही रहा है - पूर्वसहस्राब्दीवाद के प्रति बढ़ा हुआ संदेह। पूर्वसहस्राब्दी की प्रस्तुति का सामना करने वाले

व्यक्तियों को भविष्यसूचक व्याख्या के समग्र अतीत के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है, जिसमें निम्नलिखित घटनाएं शामिल हैं। वर्तमान संकट को आमतौर पर अंत के संकेत के रूप में पहचाना जाता है, चाहे वह रूसो-जापानी युद्ध, प्रथम विश्व युद्ध, द्वितीय विश्व युद्ध, फिलिस्तीन युद्ध, स्वेज संकट, जून युद्ध और योम किप्पुर हो। युद्ध। रोमन साम्राज्य के पुनरुद्धार को मुसोलिनी के साम्राज्य, राष्ट्र संघ, संयुक्त राष्ट्र, यूरोपीय रक्षा समुदाय, आम बाज़ार और नाटो के रूप में पहचाना गया है। एंटीक्रिस्ट पर अटकलों में नेपोलियन, मुसोलिनी, हिटलर और हेनरी किसिंजर शामिल थे। वर्तमान घटनाओं के पुराने नियम में कुछ भविष्यसूचक खंडों की पूर्ति के साथ इस तरह की पहचान का एक इतिहास है, जिन्होंने समय-समय पर खुद को गलत साबित किया है। कुछ लोग उस तरह की चीज़ों में फंस जाते हैं, खो जाते हैं और उससे मोहित हो जाते हैं।

2. पवित्रशास्त्र में पूर्वानुमानित भविष्यवाणी के कार्य

जहां तक पूर्वानुमानित भविष्यवाणी के कार्य का प्रश्न है, आइए बाइबल की ओर ही मुड़ें, इसका उद्देश्य क्या है? 1 देखो यूहन्ना 3:3. पद 2 में मसीह के दूसरे आगमन के बारे में बोलने के बाद, "हम जानते हैं कि जब वह प्रकट होगा तो हम उसके समान होंगे क्योंकि वह जैसा है वैसा ही देखेंगे। जो कोई उस पर यह आशा रखता है वह अपने आप को वैसे ही शुद्ध करता है जैसे वह पवित्र है।" दूसरे शब्दों में, मसीह का दूसरा आगमन केवल अटकलों के लिए नहीं है। इसका असर अब आपके जीने के तरीके पर पड़ेगा।

पतरस 4:7 को भी देखें, "सभी चीज़ों का अंत निकट है। इसलिए स्पष्ट मन और संयमित रहो ताकि तुम प्रार्थना कर सको क्योंकि मसीह वापस आने वाला है।" यह अब आपके जीने के तरीके को प्रभावित करने के लिए है, "सबसे बढ़कर, एक-दूसरे से गहराई से प्यार करें क्योंकि प्यार कई पापों को ढक देता है। बिना कुड़कुड़ाए एक दूसरे का आतिथ्य सत्कार करो। प्रत्येक व्यक्ति को अपने पास मौजूद किसी भी उपहार का उपयोग विभिन्न रूपों में ईश्वर की कृपा के वफादार प्रबंधक के रूप में दूसरों की सेवा करने के लिए करना चाहिए। यदि कोई बोले तो वह ऐसे बोलेंगा जैसे वह परमेश्वर के वचन बोल रहा हो। यदि कोई सेवा करता है तो उसे शक्ति के साथ करना चाहिए।" क्यों? "क्योंकि सभी चीज़ों का अंत निकट है, वह आ रहा है।"

2 पतरस 3:11 को देखें। श्लोक 10 में उन्होंने आकाश के गायब होने, आग से नष्ट होने की बात कही, पृथ्वी और उसमें सब कुछ उजाड़ पड़ा है। “चूँकि इस तरह से सब कुछ नष्ट हो जाएगा, तो तुम्हें किस तरह का इंसान बनना चाहिए? आप सभी को परमेश्वर के दिन की प्रतीक्षा करते हुए पवित्र और धार्मिक जीवन जीना चाहिए। श्लोक 14 को देखें, "तो फिर, प्रिय मित्रों, चूँकि आप इसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, इसलिए उसके साथ बेदाग, निर्दोष और शांति से रहने का हर संभव प्रयास करें।" 1 थिस्सलुनीकियों 5:1-11, "अब प्रिय भाइयों, समय और तारीखों के विषय में हमें तुम्हें लिखने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि तुम अच्छी तरह जानते हो कि प्रभु रात को चोर के समान आएगा।" और वह पद 6 में हमारी प्रतिक्रिया के बारे में आगे कहते हैं, "तो फिर, हम औरों के समान न बनें, जो सो रहे हैं, परन्तु सचेत रहें, और आत्म-संयमी रहें।" पद 8 से नीचे, "आइए हम विश्वास और प्रेम को कवच के रूप में, और उद्धार की आशा को टोप के रूप में धारण करके आत्मसंयमी बनें।" श्लोक 11, "एक दूसरे को प्रोत्साहित करो और एक दूसरे का विकास करो, जैसा कि वास्तव में तुम कर रहे हो।"

3. भविष्यसूचक भविष्यवाणी का उद्देश्य

हम उस तरह के एक पाठ को देखते हैं जहां भविष्यवाणी में पूर्वानुमानित तत्व भगवान के लोगों को यह दिखाने के लिए दिया जाता है कि उनका मुक्ति का कार्यक्रम उनके दिव्य उद्देश्य, योजना और कार्यक्रम के अनुसार आगे बढ़ रहा है। सभी लोगों और राष्ट्रों का इतिहास ऐतिहासिक प्रक्रिया के इस संप्रभु आदेश के अधीन है क्योंकि यह उसके उद्देश्यों के माध्यम से आगे बढ़ता है। उस तथ्य का उद्देश्य उस संदेश को सुनने वालों के जीवन के तरीके को प्रभावित करना है। भविष्यवक्ताओं ने अपने समय में, साथ ही उन लोगों के समय में भी, जो उस समय के बाद लंबे समय तक जीवित रहे, जिसमें उन्होंने उपदेश दिया, परमेश्वर के लोगों के बीच पवित्र जीवन और परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता को प्रेरित करने के लिए बात की। हमें इसे नज़रअंदाज नहीं करना चाहिए क्योंकि मेरे लिए यह संदेश की प्रारंभिक डिलीवरी के कारण का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। हां, भगवान के पास एक उद्देश्य और एक योजना है, ऐसी चीजें हैं जो भविष्य में हमारे साथ घटित होने वाली हैं। लेकिन इसे उस तरीके को आकार देना चाहिए जिसमें हम अभी रहते हैं। इसलिए

भविष्यसूचक संदेश के भविष्यवक्ता पहलू को भविष्यसूचक संदेश के पूर्वकथन पहलू में रुचि के कारण निगल नहीं जाना चाहिए। ठीक है, हमें वहीं रुकना होगा।

रेबेका वॉल्ड, जेसिका हंकलर, रूथ चैडविक, कॉनर ब्रिग्स
द्वारा लिखित ओलिविया ग्रे, कायला श्वान्के, जोशुआ अल्वेरा (संपादक)
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन,
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया